बात कम काम ज्यादा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

चिन्तन, मनन और क्रियान्वयन तीन बाते प्रायः लोग करते हैं। किसी कार्य को करने के लिए चिन्तन, मनन और क्रियान्विति की आवश्यकता होती है। जैसे किसी को कारखाना लगाना हैं तो इस पर सर्वप्रथम चिन्तन करता है अपनी पुरी शक्ति लगाकर उसको वह क्रियान्वित करता है। उसका एक लक्ष्य होता हैं कि कितने समय में कार्य पूरा करना है। यदि ज्यादा समय चिन्तन और मनन में लगा दिया और क्रियान्वित न हुई तो कठिनाई होगी। किसी भी कार्य को करने के लिए नीवं की मजबूती अत्यन्त आवश्यक है। यदि नीवं मजबूत रहती है तो उस पर चार–पांच मंजीला खड़ी कर दें तो भी वह मजबूत ही रहेगा। सरकार जो योजना बनाती है वह समयबद्ध होता है। प्रयास यह होता हैं कि कार्य को समय के अन्दर ही पूरा कर लिया जाये। काम करने के लिए समर्पित ढ़ंग से लगना बहुत आवश्यक होता है। भारतीय ऋषि मुनियों ने अपने शरीर को प्रयोगशाला बनाकर सत्य की खोज की, सत्य का साक्षात्कार किया और परमतत्व की प्राप्ति की। युवा वर्ग के लिए यह सूत्र ध्यातव्य हैं कि उन्हें समय को बर्बाद नहीं करना चाहिए। जिस दिशा में वे जाना चाहते हैं उसे प्राप्त करने के लिए चिन्तन, मनन और क्रियान्वयन कर उसे प्राप्त करें। शिक्षा की अनेक शाखाएं है। जिसने जीवन में अच्छे ढ़ंग से शिक्षा प्राप्त की है उसको आगामी जीवन में कठिनाई नहीं होती। शिक्षा प्राप्त करने के बाद मानव को कर्म क्षेत्र में उतरना पड़ता है। प्रायः हर विद्यार्थी प्रशासनिक सेवा अभियन्त्रिकी सेवा, चिकित्सा सेवा या कुछ लोग व्यापार आदि को अपनी जीविका का साधन बनाना चाहते है। इस प्रकार जीवन निर्माण के अनेक क्षेत्र है। जिस क्षेत्र में जिसको आगे बढ़ना हो उसके अनुरूप अध्ययन करना चाहिए और लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। जीवन में नयी–नयी परिकल्पनाओं को करके उसका समाधान ढूढ़ना चाहिए। कोई भी कार्य कठिन नहीं होता। यदि व्यक्ति परिश्रम के साथ किसी कार्य को करता है तो सफलता उसका वरन् अवश्य करती है।

जो व्यक्ति कार्य नहीं करते केवल बैठकर व्यर्थ में बातें करते रहते हैं ऐसे लोगों को सफलता प्राप्त नहीं होती। कायर लोग दूसरों के भरोसे बैठकर जीवन व्यतीत करना चाहते है। ऐसे

लोगों के सामने छोटी सी भी विघ्न बाधा आ जाये तो कार्य को बीच में ही छोड़ देते है। परिस्थितियों से संघर्ष करने की क्षमता ऐसे लोगों में नहीं होती। कड़ी मेहनत का अर्थ है सही दिशा में पुरुषार्थ करना। मेहनत के साथ लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। लक्ष्य स्पष्ट होने से उसकी प्राप्ति हो जाती है। जब लक्ष्य ही स्पष्ट नहीं रहेगा तो किया गया प्रयास लक्ष्य को प्राप्त नहीं करा सकता और किया गया परिश्रम व्यर्थ हो जाता है। विद्यार्थी जीवन में ही मेहनत का अभ्यास शुरू कर देना चाहिये। विद्यार्थी जब विद्यालय में जाता है तभी से यह प्रक्रिया प्रारंभ हो जानी चाहिए। कक्षा दस तक आते–आते विद्यार्थी जागरूक हो जाता है। कुछ क्षेत्र की सेवाओं का कार्य कम परिश्रम से भी प्राप्त हो सकता है, किन्तु कुछ सेवाएं ऐसी है जिनको प्राप्त करने के लिए करो या मरो के मार्ग पर चलना पड़ता है। तभी जीवन में सफलता प्राप्त हो सकती है और जीवन खुशहाल रह सकता है।

विद्यार्थी जीवन में किया गया परिश्रम जीवन भर के लिए सुख और शांति का प्रदाता होता है। जिसने अपने विद्यार्थी जीवन को व्यर्थ के कार्यों में नष्ट कर दिया उसको जीवन भर दुःख भोगना पड़ता है और दूसरों के सहारे जीवन–यापन करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति समाज पर बोझ होकर जीवन–यापन करता है। अतः विद्यार्थी जीवन में ही ऐसा प्रयास करना चाहिए कि जीवन में सफलता प्राप्त हो और दूसरे लोगों को भी संबल दिया जा सके। द्रौपदी के स्वयंवर के समय अनेक राजे–महाराजे लक्ष्य को भेदने के लिए प्रयास किये थे, किन्तु उनका प्रयास सफल नहीं रहा। केवल अर्जुन ने अपने कड़े परिश्रम से लक्ष्य पर निशाना साध करके ऐसा बाणसंधान किया कि उनको सफलता मिली। अर्जुन की तरह ही निश्चित लक्ष्य के ऊपर जो व्यक्ति बाणसंधान करता है वही जीवन क्षेत्र में सफल हो पाता है। सदैव लक्ष्य ऊँचा बनाना चाहिए। ऊँचा लक्ष्य बनाने से सफलता कही न कही अवश्य मिल जाती है। संसार में जितने भी महापुरुष हुये है उनके जीवन का मूलमंत्र कड़ी मेहनत है। जन्म से कोई महान् नहीं होता, कड़े परिश्रम और मेहनत से ही कोई व्यक्ति महान् होता है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उदाहरण हम सबके सामने है। एक गरीब परिवार से निकलकर के भारत जैसे देश का प्रधानमंत्री बन जाना उनके दृढ़ संकल्प शक्ति और कड़ी मेहनत का ही परिणाम है। एक मजदूर भी कड़ी मेहनत करता है। एक अधिकारी भी दिनभर परिश्रम करता है। लेकिन दोनों

के जीवनयापन में महान् अंतर है। अधिकारी का जीवन बड़े ही आराम से और सुखमय ढ़ंग से व्यतीत होता है। किन्तु एक मजदूर दिनभर परिश्रम करने के बाद भी अपने पूरे परिवार का पालन पोषण सही ढ़ंग से नहीं कर पाता। इसका कारण क्या है ? इसका कारण स्पष्ट है। लक्ष्य के निर्धारण करने के समय दोनों में महान् अंतर रहा होगा। इसी का परिणाम है एक तो लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो गया और दूसरा लक्ष्य नहीं प्राप्त कर सका। इसी कारण मजदूर का जीवन कष्टप्रद रहा और अधिकारी का जीवन आरामदायक। समय–समय पर कार्य की समीक्षा भी होनी चाहिए, धैर्य रखना चाहिए। भगवान् कृष्ण ने निष्काम कर्म करने का उपदेश दिया है। आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत सफलता की और ले जाती है।